आंत्र विषाक्तता (एंट्रोटोक्सिमिया)

परिचय

आंत्र विषाक्तता से ग्रसित बकरी

- पशुओं में यह रोग क्लोस्ट्रिडियम परफ्रिंजेन्स – टाईप डी नामक जीवाणु से उत्पन्न एप्सीलोन विष के कारण होता है । इस विष से पशु शरीर की रुधिर वाहिकाओं एवं तंत्रिका तंत्र को अत्यधिक नुकसान पहुँचता है।
- इस बीमारी का जीवाणु पशु के आहरनाल में स्वाभाविक रूप से पाया जाता है और पशु के मल से भूमि को दूषित कर अन्य के लिए संक्रमण का स्रोत बनता है। यह जीवाणु भूमि में 1 वर्ष से ज्यादा समय तक जीवित नहीं रह सकता है।
- भेड़–बकरियों में यह अति प्रचलित रोग है। यह रोग वयस्क पशु की अपेक्षा बच्चों (नवजात भेंडरू 3–10 सप्ताह की उम्र के और दूध छुड़ाने के 10 माह की आयु तक) में ज्यादा पाया जाता है। बकरियों में ये बीमारी किसी भी उम्र में हो सकती है।
- यह बीमारी उन पशुओं में ज्यादा होती है जिनको उच्च गुणवत्ता का आहार दिया जाता है और जो पूरी तरह स्वस्थ्य हैं। इसी कारण से इस बीमारी को अत्याहार बीमारी भी कहा जाता है।
- अचानक भोजन में बदलाव, अधिक मात्रा में दाना, दूध तथा अधिक शर्करायुक्त आहार के कारण आहरनाल की गति प्रभावित होती है और जीवाणु से उत्पन्न विष इकट्ठा होकर आतों के चलन को ठप कर इस रोग को जन्म देने में सहायता करतें हैं।
- अधिकांशतः प्रभावित पशु की 24 घंटे के अन्दर बिना कोई लक्षण प्रदर्शित किए मृत्यु भी हो सकती है। वे पशु जो इस अवधि में जिंदा बच जातें हैं उन्ही में इस रोग के लक्षण प्रदर्शित होते हैं।
- रोग की पशु प्रभावन दर 20–30% तथा प्रभावित पशुओं में मृत्युदर 100% तक हो सकती है।
- पशुओं में रोग काल कुछ घंटे से कुछ दिन तक हो सकता है।

लक्षण

- सामान्यतः इस बीमारी की अवधि 2–12 घण्टे के बीच होती है और तीव्र रोग की स्थिति में पशु बिना किसी लक्षण के मृत पाया जा सकता है।
- रोगी पशु में एकाएक भूख का खत्म होना, अत्यधिक पेट दर्द, पेट का फूलना, पानी जैसा पतले हरे रंग का दस्त जो रक्त अथवा म्यूकस मिश्रित हो सकता है।
- प्रभावित पशु अधिक पेट दर्द के कारण अपने पैरों से पेट को पीटते देखा जा सकता है।

- पशु को तेज बुखार (105° फा.) रहता है।
- पशु के शरीर में ऐठन, उबासी, चेहरे में भिन्न भाव दिखने लगते हैं।
- कभी–कभी पशु बेहोश होने के उपरान्त गिर जाता हैं और 24 घंटे के भीतर मृत हो जाता है।
- दीर्घकालीन रोग में पशु दस्त से प्रभावित होता है एवं उसका उत्पादन कम हो जाता है।
- वयस्क जानवर में जबड़ों का बार–बार चलाना, दातों का पीसना, मांसपेशियों में अकड़न, लड़खड़ाना और दल के अन्य सदस्यों से पीछे धीरे–धीरे चलना शामिल हैं। इन पशुओं में दूध का उत्पादन एवं शारीरिक भार कम होने लगता है।

उपचार

- इस बीमारी के अति तीव्र होने के कारण, समुचित इलाज का समय नहीं मिल पाता है।
- प्रतिजीवविष को 200 यूनिट/किलोग्राम की दर से देने यह पशु के शरीर में फैले एप्सीलोन विष को बेअसर कर देता है। परंतु ये अत्यधिक महंगा होने के कारण सामान्यतः उपयोग में नहीं लाया जाता।
- बहुप्रभावी ऐन्टिबायोटिक जैसे टेट्रासाइक्लीन या सल्फोनामाईड औषधियाँ काफी प्रभावी है।
- विषाक्त की अधिकता को रोकने के लिए ऐक्टीवेटेड चारकोल, मैगनीशियम आक्साइड, केओलिन तथा टैनिक ऐसिड 2 : 1 : 1 : 1 में दें।
- साधारण स्थिति में सहायक चिकित्सा लाभकारी है।
- अफरा के लिए प्याज (10 ग्राम), लहसुन (10 ग्राम), हींग (6 ग्राम), काली मिर्च (2 ग्राम) के मिश्रण को 50 मि.ली. सरसों के तेल के साथ देने से पशु को लाभ मिलता है ।
- तारपीन तेल (10 मि.ली.), हींग (5 ग्राम), 50 मि.ली. अलसी के तेल के साथ देने से लाभ मिलता है।
- सौंफ (5 ग्राम), लोंग का तेल (2 मि.ली.), काली मिर्च (2 ग्राम), जीरा (5 ग्राम), अमोनियम क्लोराइड (2ग्राम) का मिश्रण कुल 50 मि.ली. सरसों के तेल के साथ देने से अफरा में लाभ मिलता है।

रोकथाम

- अति प्रतिरक्षा सीरम देने से अल्पकालिक लाभ हो सकता है
- आंत्रशोथ रोग की रोकथाम के लिए टीका उपलब्ध है।
- दो से तीन माह की आयु में 21 दिन के अन्तराल में दो टीके लगवायें तथा प्रतिवर्ष इस टीकाकरण को जारी रखें।
- टीकाकरण के बाद कुछ दिनों तक पशु को थोड़ा कम आहार दें।
- पशु प्रक्षेत्र के प्रबन्धन में सुधार करें तथा उसके आहार पर विशेष ध्यान दें।

लेखक :

डा0 अखिलेश कुमार, वैज्ञानिक, औषधि विभाग
डा0 त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक), समविश्वविद्यालय
डा0 रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक
डा0 अशोक कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, जैविक मानकीकरण विभाग
डॉ0 नवनीत कौर, कास्ट–एसीएलएच, परियोजना

भाकृअनुप
ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
1889
IVRI

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ
भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.